पद्मावत : मानसरोदक खंड / पद्य सं. 2

खेलत मानसरोवर गईं । जाइ पालि पर ठाढी भईं ॥
देखि सरोवर हँसै कलेली । पदमावति सौं कहहिं सहेली
ए रानी ! मन देख बिचारी । एहि नैहर रहना दिन चारी ॥
जौ लहि अहै पिता कर राज । खेलि लेह जौ खेलह आज ॥
पुनि सासुर हम गवनब काली । कित हम, कित यह सरवर-पाली ॥
कित आवन पुनि अपने हाथा । कित मिलि कै खेलब एक साथा ॥
सासु ननद बोलिन्ह जिउ लेहीं । दारुन ससुर न आवै देहीं ॥

पिउ पियार सब ऊपर, सौ पुनि सो करै दहूँ काह ।
दहुँ सुख राखै की दुख, दहुँ कस जरम निबाह ॥2॥

सभी कुमारियाँ मानसरोवर पहुँचीं. वे ताल के ऊपरी भाग पर खड़ी हो गयीं. उस सरोवर को देख देखकर वे मनोविनोद और क्रीड़ा करती हैं. पद्मावती से सभी सहेलियाँ कहती हैं - हे रानी, जरा मन में सोचो तो, इस सुखद पीहर में चार दिन ही रहकर सुख लेना है. पिता के राज में जबतक हैं, तबतक जो स्वच्छंद क्रीड़ायें करनी हैं कर ली जाएँ. कल जब ससुर के घर के लिए हमारा गौना हो जायेगा तब कहाँ हम और कहाँ ये सुंदर सरोवर! एकदम हम सब स्वप्न सी अलग अलग हो जायेंगी. तब यहाँ आना हमारे लिए कहाँ संभव होगा - कब वश में होगा? फिर हम साथ-साथ कहाँ खेल पाएंगी? वहाँ हरदम सास-ननद हमारे मन को मसोसेंगी और कठोर ससुर हमें यहाँ आने नहीं देगा.
इन सबके ऊपर प्रियतम का भय बना रहेगा कि व न जाने क्या कर बैठे. क्या पता कि वह हमें सुख से रखेगा या दुःख देगा? क्या पता है, वहाँ जीवन किस प्रकार व्यतीत होगा!

शब्दार्थ :
पालि =सरोवर का ऊपरी भाग. रहसहि = विनोद करती हैं. केलि = क्रीड़ा. नेहर = पिता का घर. राजू = राज. गवनब = गौना. काली = कुल. जिउ = जिया/कलेजा/मन. काह = क्या. दुहुं = कौन जाने. दारुन = कठोर. दहुँ = देवे. कस = कैसे. जरम = जीवन. निबाहु = गुजारा/ निबाह.